As Certain as Death

03-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - इस पुरानी दुनिया का अब अन्त है, इसलिए संगमयुग पर तुम्हें भविष्य राजाई के लायक बनना है"

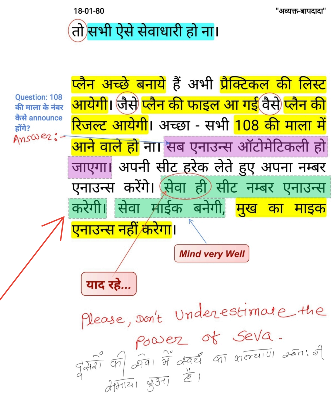
18-01-80 "अव्यक्त-बापदादा"

तो सभी ऐसे सेवाधारी हो ना।

Question: 108 की माला के नंबर कैसे announce होंगे?
Answer:-

प्लैन अच्छे बनाये हैं अभी प्रैक्टिकल की लिस्ट आयेगी। जैसे प्लैन की फाइल आ गई वैसे प्लैन की रिजल्ट आयेगी। अच्छा - सभी 108 की माला में आने वाले हो ना। सब एनाउन्स ऑटोमेटिकली हो जाएगा। अपनी सीट हरेक लेते हुए अपना नम्बर एनाउन्स करेंगे। सेवा ही सीट नम्बर एनाउन्स करेगी। सेवा माईक बनेगी, मुख का माइक एनाउन्स नहीं करेगा।

Mind very Well

याद रहे...

Please, Don't Underestimate the Power of Seva.

दूसरों की सेवा में स्वयं का कल्याण स्वतः ही समाया हुआ है।

प्रश्नः- बच्चों में कौन सा शौक हो तो गद्दी नशीन बन सकते हैं?

उत्तर:- आलराउन्ड सर्विस करने का शौक हो तो गद्दीनशीन बन सकते हैं, जो आलराउन्ड सर्विस कर बहुतों को सुख देते हैं उन्हें उसका उजूरा भी मिलता है। बच्चों को हमेशा हर सर्विस में हाज़िर रहना चाहिए। ऐसा होशियार बनो जो माँ-बाप का शो करो। मम्मा बाबा कहते हो तो उन जैसा बनकर दिखाओ।

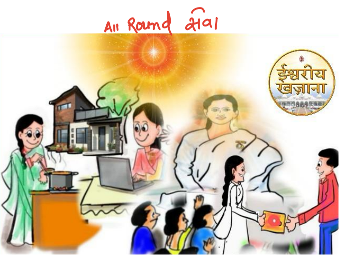

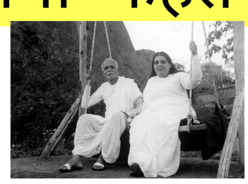

गीत:- इस पाप की दुनिया से..... Click

इस पाप की दुनिया से, अब और कहीं ले चल -२
चित चैन जहाँ पाए
चित चैन जहाँ पाए, ले चल तू वहीं ले चल
इस पाप की दुनिया से, अब और कहीं ले चल

लोगों की जफ़ाओं से, दुनिया की निगाहों से -२
आ दूर कहीं ले चल
आ दूर कहीं ले चल, अब और कहीं ले चल
इस पाप की दुनिया से, अब और कहीं ले चल -२
चित चैन जहाँ पाए
चित चैन जहाँ पाए, ले चल तू वहीं ले चल
इस पाप की दुनिया से, अब और कहीं ले चल -२

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

v/s

चढ़ाओ नशा...

How lucky and Great we are...!

03-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ओम् शान्ति। सिर्फ मीठे मीठे ब्रह्माकुमार कुमारियाँ ही यह जानते हैं कि पाप की दुनिया और पुण्य की दुनिया किसको कहा जाता है। पतित दुनिया किसको, पावन दुनिया किसको कहा जाता है। भल मनुष्य कहते हैं कि हे पतित दुनिया को पावन बनाने वाले आओ, परन्तु जानते नहीं हैं। यह भी आत्मा ही कहती है है पतित-पावन... सब मनुष्य मात्र बुलाते रहते हैं। परन्तु यह किसको पता नहीं है कि पावन दुनिया किसको कहा जाता है। वह कब और कैसे स्थापन होगी। अभी तुम नॉलेजफुल बाप के बने हो, इसलिए नॉलेजफुल ज्ञान सागर बाप को सिर्फ तुम ही जानते हो। और कोई बिल्कुल नहीं जानते कि पावन दुनिया फिर पतित कैसे बनती हैं। पतित दुनिया फिर पावन कैसे बनती है। पतित दुनिया में कौन रहते हैं और पावन दुनिया में कौन रहते हैं। यह सब बातें तुम अभी जानते हो। पावन दुनिया सतयुग को कहा जाता है। जरूर पावन दुनिया भारत में भी तो एक ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म का राज्य था, इसलिए भारत सबसे प्राचीन देश गाया जाता है। अभी तुम समझते हो हमको फिर से पावन दुनिया में जाने के लिए पतित-पावन बाप युक्तियाँ बता रहे हैं।

वाह रे मैं...

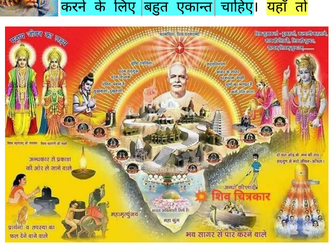

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

03-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

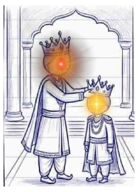

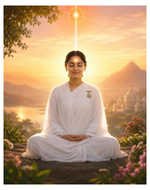

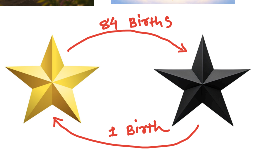

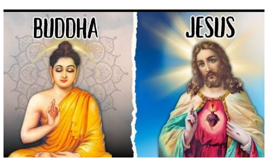

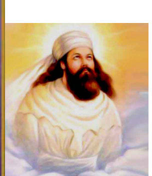

बाप कहते हैं एक सेकेण्ड में युक्ति बताता हूँ। बाप आते ही हैं नई दुनिया का राज्य भाग्य देने। यह है बेहद के बाप से बेहद का वर्सा। बाप ही आकर राजयोग सिखाते हैं। हम राजयोग सीख रहे हैं। बाप कहते हैं तुम ही सतोप्रधान थे फिर सतोप्रधान बनना है। आदि सनातन देवी-देवता धर्म था, न कि हिन्दू। देवी-देवता धर्म भारत का ही पहले-पहले था। फिर जरूर पुनर्जन्म लेते आये होंगे। जैसे क्रिश्चियन लोग भी पुनर्जन्म ले वृद्धि को पाते हैं। बौद्धियों का धर्म स्थापन करने वाला बुद्ध, वह हो गया धर्म स्थापक। एक बुद्ध से कितने ढेर बौद्धी निकले। क्राइस्ट एक था। अभी देखो कितने क्रिश्चियन हो गये हैं। सब धर्मों का ऐसे-ऐसे चलता आया है। वैसे जब आदि सनातन देवी-देवता धर्म था तो यह और कोई थे नहीं। औरों का तो जानते हैं। क्रिश्चियन धर्म क्राइस्ट, इस्लाम धर्म इब्राहम ने स्थापन किया। अच्छा जो सतयुग में आदि सनातन देवी-देवता धर्म था वह किसने स्थापन किया? सतयुग में देवी-देवताओं की राजधानी चली है ना। तो M.M.M.....imp. जरूर कोई ने राज्य स्थापन किया है। सतयुग में देवी-देवता धर्म था, वह अभी बाप स्थापन करते हैं इसलिए बाप को आना

v/s

9 lakh at Begining

03-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ही पड़ता है संगमयुग पर। अभी सब मनुष्य मात्र पतित दुनिया में बैठे हैं। पुरानी दुनिया में करोड़ों मनुष्य हैं। v/s नई दुनिया में तो इतने मनुष्य हो न सकें। वहाँ एक धर्म था। इस्लामी, बौद्धी, क्रिश्चियन आदि कोई नहीं थे। वह देवता धर्म अब प्राय: लोप है। वह कैसे भगवान ने स्थापन किया था, यह कोई नहीं जानते। देवता धर्म नाम ही भूल गये हैं, हिन्दू धर्म कह देते हैं।

But we know, How Lucky & Great we are..!

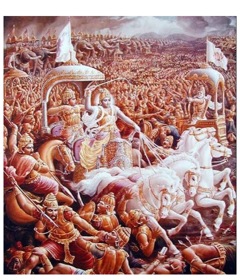

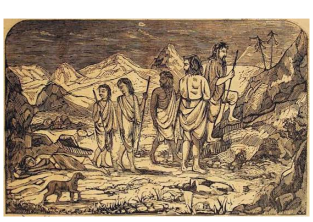

अब बाप समझा रहे हैं मैं आता ही तब हूँ जब पुरानी दुनिया को बदलना है। अभी इस पुरानी दुनिया की इन्ड है। यह सिर्फ तुम ब्राह्मण ही जानते हो। चढ़ाओ नशा... इस महाभारी लड़ाई से ही पुरानी दुनिया की इन्ड हुई थी। गीता में दिखाते हैं सब खत्म हो गये। कोई नहीं रहा। 5 पाण्डव बचे वह भी पहाड़ों पर गल मरे। परन्तु ऐसा कोई होता नहीं है। यह तो बाप स्थापन करते हैं। प्रलय अथवा जलमई तो होती नहीं। बाबा को पुकारते हैं हे पतित-पावन आओ, हमारे दु:ख हरो सुख दो क्योंकि अभी रावण राज्य है। रामराज्य

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Simple Logic

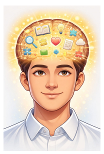

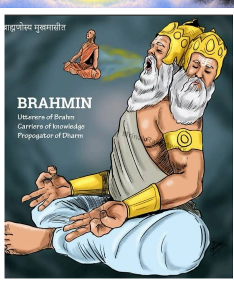

चाहते हैं तो जरूर रावण राज्य है ना। बाप समझाते हैं अभी रामराज्य की स्थापना, रावण राज्य का विनाश हो जाता है। मैं जो युक्ति सिखलाता हूँ, जो सीखते हैं वही जाकर नई दुनिया में राज्य करते हैं। यह ज्ञान वहाँ कुछ भी रहेगा नहीं। अब तुम्हारी बुद्धि में सारी नॉलेज है। जिनकी बुद्धि में है वह औरों को समझाते हैं। नम्बरवार तो हैं ना। सर्विसएबुल बच्चों की बुद्धि में सारा ज्ञान टपकता रहता है। जरूर सतयुग में पहले-पहले देवी-देवता धर्म वाले थे। यह भी तुम जानते हो। बाप पहले-पहले ब्राह्मणों को ही रचते हैं प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा। यह ज्ञान यज्ञ है ना तो जरूर ब्राह्मण सम्प्रदाय ही चाहिए। ब्राह्मण सम्प्रदाय जरूर संगम पर ही होगी। आसुरी सम्प्रदाय है कलियुग में, दैवी सम्प्रदाय है सतयुग में। तो जरूर संगम पर ही स्थापना होगी दैवी सम्प्रदाय की। जब बाजोली खेलते हैं तो पाँव और चोटी मिलते हैं। तुम ब्राह्मण हो फिर याद आता है। विराट रूप का चित्र भी जरूरी है, इसकी समझानी बड़ी अच्छी है। कहते भी हैं बाबा हम आपके 6 मास के बच्चे हैं। 4 दिन के बच्चे हैं। कोई कहते हैं हम एक दिन का बच्चा हूँ अर्थात् आज ही बाबा का बना हूँ। मुख वंशावली

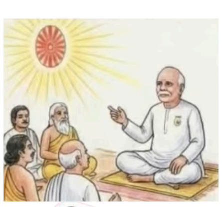

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा

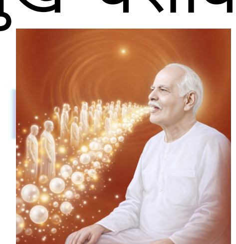

बहुत ढूंढने के बाद मिले हो मेरे बाबा..
अब आप को जो पा लिया है तो हमें
और कुछ भी नहीं चाहिए मीठे बाबा...
जो भी पाना था वो सब कुछ पा लीया है
मेरे प्राण बाबा...

बना हूँ। जो जीते जी बाप के बनते हैं तो कहते हैं बाबा हम आपके हैं। छोटा बच्चा तो कह न सके। यह ज्ञान है बड़ों के लिए। कहते हैं बाबा हम आपका छोटा बच्चा हूँ। छोटे बच्चों को चित्रों पर समझाना सहज है। दिन-प्रतिदिन समझानी विस्तार को पाती रहती है। यह चित्रों की युक्ति ड्रामा प्लैन अनुसार 5 हजार वर्ष पहले मुआफिक निकली है। इसमें यह कोई प्रश्न नहीं उठा सकता कि शुरू में क्यों नहीं निकली, अभी क्यों? ड्रामा अनुसार जो युक्ति जब निकलनी होगी तब निकलेगी। स्कूल में पढ़ाई के नम्बरवार दर्जे होते हैं। ऐसे थोड़ेही है पहले से ही बड़ा इम्तहान पास कर लेंगे। पहले सिर्फ अल्फ बे पढ़ाया जाता है ना। यह तो बाप का बच्चा बनने से ही बाप स्वर्ग की बादशाही देते हैं। बाप को बाप कहने बाद फिर निश्चय टूटता थोड़ेही है। यहाँ तो बाबा-बाबा कहते निश्चय टूट जाता है। तुम जानते हो यह तो बेहद का बाप है। तुम बेहद के बाप से बेहद का वर्सा ले रहे हो तो उनकी श्रीमत पर चलना है। बाप कहते हैं और सभी बातें छोड़ मुझे याद करो और वर्से को याद करो। चलते-फिरते यह याद रहने से खुशी भी रहेगी। परन्तु यह याद ठहरती क्यों नहीं

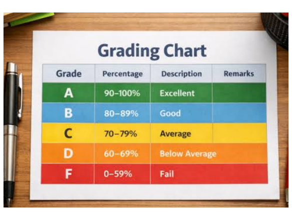

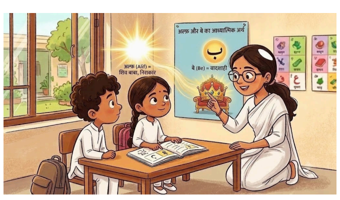

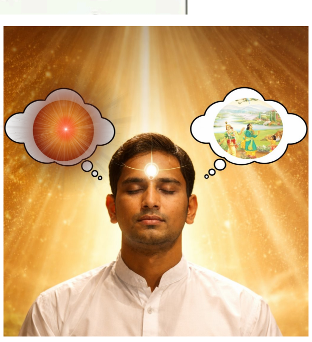

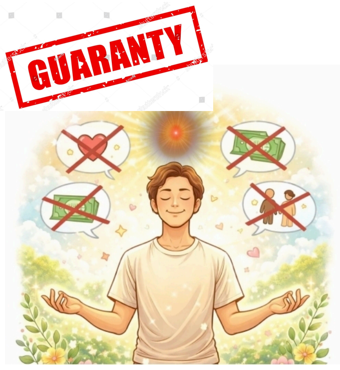

याद करो अपना वायदा...

है। तुम्हारी तो गैरन्टी है- बाबा हम आपके बनेंगे तो हमारा और कोई से ममत्व नहीं रहेगा। हम आपकी मत पर ही चलूँगा। बाप भी कहते हैं श्रीमत पर न चलने से भूलें होती रहेंगी। श्रीमत पर चलने से खुशी का पारा चढ़ेगा। आत्मा को अतीन्द्रिय सुख मिलता है तो कितनी खुशी होती है। आत्मा जानती है परमपिता परमात्मा ने हमको राज्य भाग्य दिया था, जो 84 जन्म लेते-लेते गँवा दिया है फिर बाप दे रहे हैं। तो अपार खुशी होनी चाहिए ना। अन्दर की खुशी भी दिखाई पड़ती है ना। इस लक्ष्मी-नारायण के चेहरे से दिखाई पड़ता है ना। भल अज्ञान काल में कोई-कोई बहुत अच्छे खुशी में होते हैं। बातचीत करने में भी अच्छे होते हैं।

समझा?

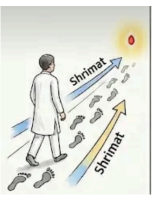

We have Experienced this

मनुष्य सृष्टि में सबसे ऊंच पोजीशन किसका है? यूँ तो सबसे ऊंच है शिव परमात्मा जिसको सब फादर कहकर पुकारते हैं। परन्तु उनके आक्यूपेशन को जानते नहीं। जब बाप आये तब आकर अपना परिचय दे। अभी तुम बच्चे जानते हो हमको बाबा से

03-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

हाँ जी मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

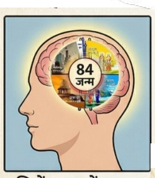

वैकुण्ठ की राजाई मिलती है। खुशी होनी चाहिए ना। हम नर से नारायण बनते हैं। कोई भल हाथ उठा लेते हैं परन्तु कुछ भी समझते नहीं। जिनको निश्चय रहता है तो उनको यह खुशी रहती है कि अब हमने 84 जन्म पूरे किये। अब हम बाबा की मत पर चल विश्व के मालिक बनते हैं। इस पढ़ाई का नशा कितना होना चाहिए। प्रेजीडेंट, गवर्नर आदि को नशा तो है ना। बड़े-बड़े आदमी आते हैं उनसे मिलने। बिगर पोजीशन को जानें कब कोई से मिल न सके। बाबा भी कब मिलते नहीं हैं। बाबा की पोजीशन को सिर्फ तुम बच्चे ही जानते हो सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हो। भल ब्रह्माकुमार कहलाते हैं परन्तु बुद्धि में यह नहीं रहता कि हम शिवबाबा की सन्तान हैं। उनसे हम स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। न बाप को, न वर्से को याद कर सकते हैं। याद रहे तो अन्दर की खुशी भी रहे ना।

Point for Life time

इसी परमात्म सत्य ज्ञान को पाने के लिए भक्ति में अनेकों ने अपने रात दिन, भूख प्यास एक किए हैं एवं प्राण तक गंवाए है। कई आत्माएं आज भी अपना शिर उतार कर रखने को तैयार खड़ी है इसी अमूल्य ज्ञान को प्राप्त करने के लिए।

So, please Value this invaluable Time and ज्ञान
नहीं तो अंत में पश्चाताप में खून के आंसू आयेंगे कि "हाथ तो आया पर मुंहको न लगा सकें।"

शाहों का शाह मेरा बाबा

कापारी खुशी

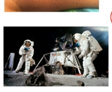

This is ultimate knowledge
So, Value this Time & Knowledge

05-01-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

नॉलेजफुल बनते हो, इनसे जास्ती नॉलेज होती नहीं। तुम इस नॉलेज से देवता बन जाते हो। इससे ऊंच कोई नॉलेज है नहीं। वह है माया की नॉलेज, जिससे विनाश होता है। वह लोग (साइन्टिस्ट) मून में जाते हैं, खोजते हैं। तुम्हारे लिए कोई नई बात नहीं। यह सब माया का पॉम्प है। बहुत शो करते हैं,

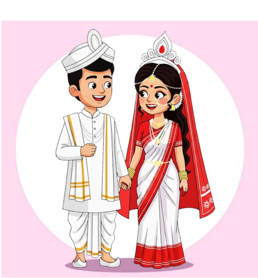

जैसे कन्या की शादी कराते हैं तो उनको गुप्त दान दिया जाता है। पेटी बन्द कर चाबी हाथ में दे देते हैं।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

03-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

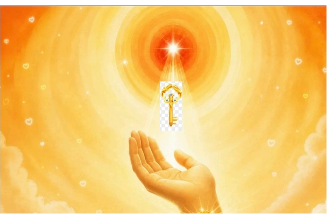

बाप भी तुमको विश्व के बादशाही की चाबी हाथ में दे देते हैं। तुम नये सतयुगी विश्व का उद्घाटन करते हो। स्वर्ग में भी तुम जायेंगे। बाबा तुमको लायक बनाते हैं। भगत तो स्वर्ग में जाने लायक बन न सकें। जब तक बाबा ज्ञान न दे, पवित्र न बनें इसलिए नारद का मिसाल है। भल भगत तो अच्छे-अच्छे बहुत हैं परन्तु आत्मा तो पतित है ना। जन्म-जन्मान्तर वह पतित बनते आये हैं, जब तक बाप न मिले तब तक स्वर्ग में जा न सके। तुमको बाप ने ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट किया है, जो तुम जाकर नई दुनिया में राज्य करेंगे। दूसरे कोई राजाई स्थापन करते ही नहीं हैं। न किसको मालूम है। बाप ही संगमयुग पर आकर भविष्य 21 जन्मों की राजाई स्थापन कर रहे हैं। इस बाप को कोई भी जानते नहीं।

समझा?

Exclusive Authority of Shiv baba

But we know, How Lucky & Great we are..!

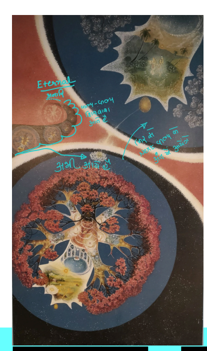

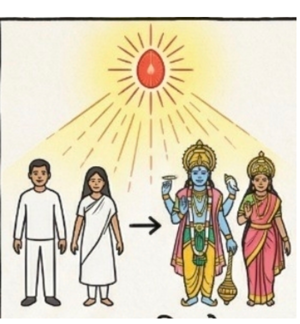

अभी तुम बच्चे समझते हो बरोबर 5 हजार वर्ष पहले भगवान आया था। गीता का ज्ञान सुनाया था, जिससे मनुष्य से देवता बने थे। गीता है ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म का शास्त्र। सतयुग में तो

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

कोई शास्त्र आदि होते नहीं। बाप कहते हैं मैं संगमयुग पर ही आता हूँ। फिर से आकर सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान सुनाता हूँ, वही देवी-देवता बनते हैं फिर 84 का चक्र लगाकर जब अन्त में आते हैं तो उन्हों को ही आकर फिर समझाता हूँ। बीच में कभी भी मैं आता ही नहीं हैं। ऐसा थोड़ेही कि क्राइस्ट कोई बीच में आ जायेगा और जो भी धर्म स्थापन करते हैं वह इस दुनिया के लिए। मैं आता ही हूँ संगम पर नई दुनिया स्थापन करने। क्राइस्ट की आत्मा आकर प्रवेश कर अपना धर्म स्थापन करती है। यह बाप तो राजाई स्थापन करते हैं। यह किसको पता नहीं है कि यह लक्ष्मी-नारायण की राजाई कब और किसने स्थापन की। यह जो लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर आदि बनाते हैं उन्हों से पूछना चाहिए। तुम सभा में भी पूछ सकते हो। यह राज़ तुम्हारी बुद्धि में है। बाबा, ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं कल्प-कल्प, और कोई जान न सके। अक्षर भी हैं, परन्तु यथार्थ रीति किसकी बुद्धि में बैठता नहीं है। कोई-कोई बच्चों पर ग्रहचारी भी बैठ जाती है। देह-अभिमान है पहले नम्बर की ग्रहचारी। बाप कहते हैं बच्चे, देही अभिमानी भव। यह लक्ष्मी-नारायण का चित्र और

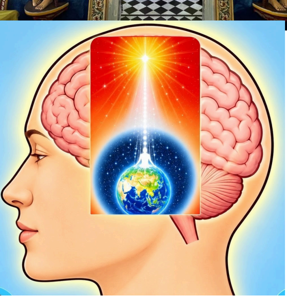

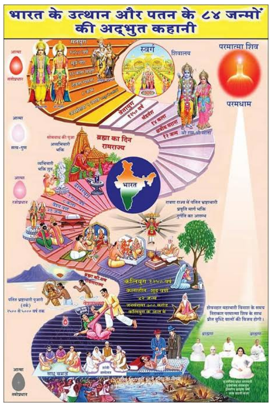

03-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

अभी गफलत में ना रहना, ये बातें मीठे बाबा ने 1969 से पहले कही थी

25/03/2025 बाप सर्वशक्तिमान है या ड्रामा? ड्रामा है फिर उनमें जो एक्टर्स हैं उनमें सर्वशक्तिमान कौन है? शिवबाबा। और फिर रावण। आधाकल्प है राम राज्य, आधाकल्प है रावण राज्य। घड़ी-घड़ी बाप

सीढ़ी का चित्र समझाने के लिए बड़ी अच्छी चीज़ है। बहुतों का इससे कल्याण हो सकता है। परन्तु ड्रामा में शायद देरी है इसलिए विघ्न पड़ते हैं, राजधानी स्थापन होने में। बाप खुद कहते हैं बहुत विघ्न पड़ते हैं। माया बड़ी समर्थ है। मेरे बच्चों को झट नाक से, कान से पकड़ लेती है। इसको कहा जाता है राहू की ग्रहचारी।

भारत में खास इस समय विकारों रूपी राहू की पूरी ग्रहचारी बैठी हुई है। तुम सेकेण्ड में सिद्ध कर सकते हो कि यही भारत पावन हीरे जैसा था। अब विकारी कौड़ी मिसल बन पड़ा है. फिर हीरे जैसा बनना है। कहानी सारी भारत की है। बाप आकर हीरे जैसा बनाते हैं।

फिर भी कितने प्रकार के विघ्न पड़ते हैं। देह-अभिमान का तो बड़ा भारी विघ्न पड़ जाता है। लक्ष्मी-नारायण के चित्र पर भी किसको समझाना बड़ा सहज है।

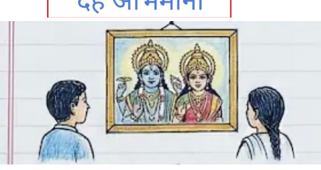

M.M.M.....imp.

बच्चों को सर्विस का बहुत शौक होना चाहिए। सर्विस भी बहुत किसम की है ना। बहुतों को सुख देते हैं तो उसका उजूरा भी बहुत मिलता है. कोई आलराउन्ड हड्डी सर्विस करते हैं। खुशी रहनी चाहिए हमको आलराउन्ड बनना है। बाबा हम सर्विस में हाज़िर हैं। अच्छे-अच्छे बच्चे रूहानी सर्विस करने वाले, खाना

अगर कोई कहता है कि मुझे बाबा से प्यार है पर सेवा से नहीं तो इसका मतलब है -उसका बाबा से भी प्यार नहीं। क्योंकि जिससे प्यार होता है उसका सब कुछ प्यारा लगता है।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

03-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

अपने हाथ से पकाते हैं। तुमको मालूम है कि बच्चे भी इतने होशियार हो जाते हैं जो गद्दी ले लेते हैं। यहाँ तो घर सम्भालने वाली मातायें हैं। अब माताओं, कुमारियों को इस सर्विस में खड़ा हो जाना चाहिए। मम्मा जैसी सर्विस कर दिखानी चाहिए। शो करना चाहिए। बाकी सिर्फ मम्मा, मम्मा करने से क्या फायदा। उन जैसा बनना चाहिए। अच्छा!

M.M.M.....imp.

मीठे मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

योग धारणा सेवा M.imp.

03-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) देह-अभिमान की ग्रहचारी ही यज्ञ में विघ्न रूप बनती है, इसलिए जितना हो सके देही-अभिमानी बनने का पुरुषार्थ करना है।

देही अभिमानी

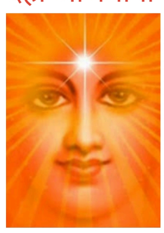

2) अपनी पढ़ाई और सतयुगी पद के पोजीशन की खुशी वा नशे में रहना है, श्रीमत पर चलना है। कोई भी भूल नहीं करनी है।

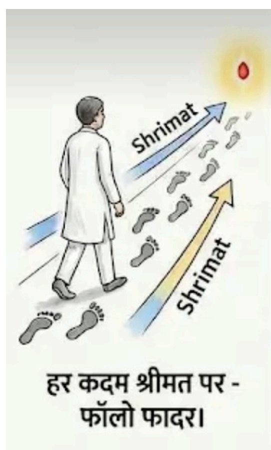

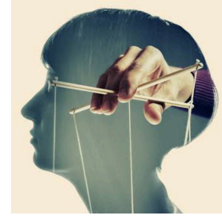

Method/Process/Instrument

03-10-2026 प्रात: ओम् शान्ति "बापदादा"

वरदान:- रूहानी एक्सरसाइज और सेल्फ कन्ट्रोल द्वारा महीनता का अनुभव करने वाले फरिश्ता भव

Outcome/Output/Result

Finale Achievement

बुद्धि की महीनता व हल्कापन ब्राह्मण जीवन की पर्सनेलिटी है। महीनता ही महानता है। ये पक्का समझ लो..

लेकिन इसके लिए रोज़ अमृतवेले अशरीरीपन की रूहानी एक्सरसाइज करो और व्यर्थ संकल्पों के भोजन की परहेज रखो।

परहेज के लिए सेल्फ कन्ट्रोल हो। जिस समय जो संकल्प रूपी भोजन स्वीकार करना हो उस समय वही करो।

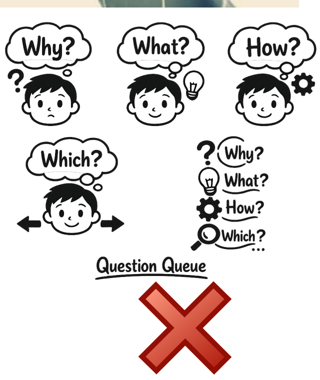

Then only समझा?

व्यर्थ संकल्प का एकस्ट्रा भोजन नहीं करो तब महीन बुद्धि बन फरिश्ता स्वरूप के लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे।

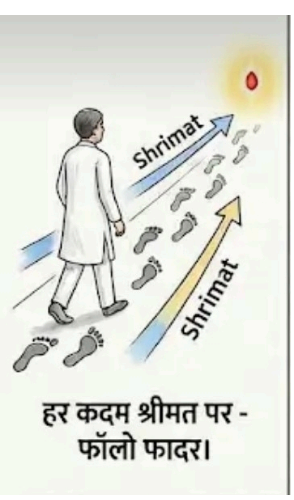

Definition of

स्लोगन:- महान आत्मा वह हैं जो हर सेकण्ड, हर कदम श्रीमत पर एक्यूरेट चलते हैं।

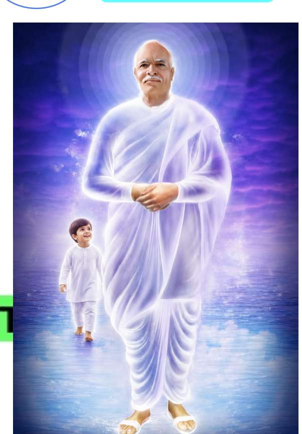

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा

03-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ये अव्यक्त इशारे -

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन

अपकारी पर भी उपकार करो

विशेष रुप से अपनी मन्सा अर्थात् संकल्प शक्ति द्वारा,

वाणी की शक्ति द्वारा,

अपने संग के रंग द्वारा,

सम्बन्ध के स्नेह द्वारा,

खुशी के अखुट खज़ाने द्वारा

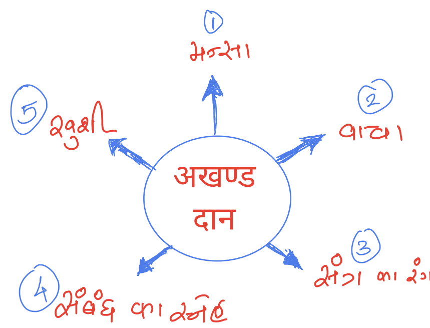

अखण्ड दान करते रहना यही है परोपकार करना।

कोई भी आत्मा सम्पर्क में आये तो खुशी के खज़ाने से सम्पन्न होकर जाए, ऐसे अखण्ड दानी बनो।

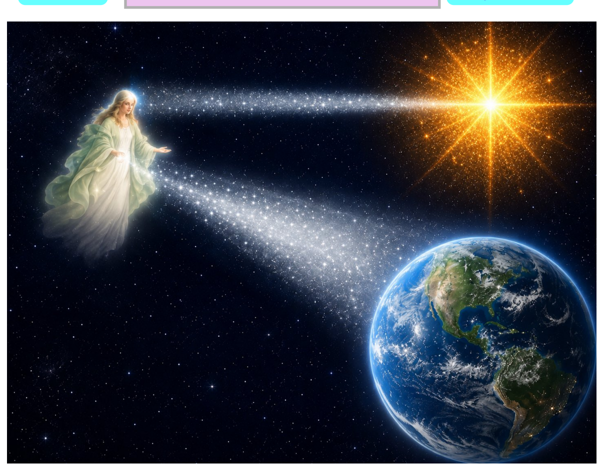

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans Sept 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Sept 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

12.2 अमृतवेले की विशेषतायें

(अ) मीठे बच्चे अमृतवेले उठ बाप की याद का घृत रोज़ डालो, तो आत्मा रूपी ज्योति सदा जगी रहेगी। घृत डालने के लिए सवेरे का टाइम बहुत अच्छा है। आत्मा रूपी ज्योति को प्रज्वलित करने के लिए सवेरे-सवेरे याद की यात्रा में बैठना है। याद से ही आत्मा की जंक निकलेगी, फिर सच्चा सोना बनेगी।

(आ) मीठे बच्चे, शिव बाबा की **नम्बर वन श्रीमत है सवेरे-सवेरे उठ मुझ बाप को याद करो, तो तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा।** कहते हैं सुबह का साईं। व्यापारी लोग सुबह को दुकान के आगे माथा टेक कर फिर अन्दर घुसते हैं क्योंकि आमदनी होती है ना! आमदनी के लिए कहते हैं — "सुबह का साईं बेड़ा बने लाईं... ऐसे कहते हैं। साईं बाबा है रात को दिन बनाने वाला। रात का साईं है रावण। रात को दिन बनाने वाला साईं बाबा यह एक ही है और बहुत भोला है। नाम ही है भोलानाथ। भोली कन्याओं-माताओं पर ज्ञान का कलश रखते हैं। उन्हों को वर्सा दे, विश्व का मालिक बनाते हैं। तुम अपने बाप को सवेरे उठकर याद करते रहो तो एकदम बेड़ा पार हो जायेगा।

The World Almighty's Guarantee

(इ) बाप कहते हैं **रात को जागो। तुम्हारी तबियत खराब नहीं होगी।** योग से तो और ही बल मिलेगा। स्वदर्शन चक्रधारी बन चक्र फिराओ। **हे नींद को जीतने वाले लाडले बच्चे! याद से ही विकर्म विनाश होंगे।** मुख्य बात है सवेरे उठ कर अल्फ़ को याद करना। यह वेला सोने की नहीं है। इस उपाय से ही विकर्म विनाश होते हैं। और कोई उपाय नहीं। बाप तुम बच्चों के साथ कितना वफ़ादार है! कभी तुम को छोड़ेंगे नहीं। आये ही हैं सुधार कर साथ ले जाने। याद

One & Only way

બ્રહ્માબાબા
નર + સિંહ
શિવબાબા

की यात्रा से ही तुम सतोप्रधान होंगे। भक्त लोग भी सुबह सवेरे उठते हैं। माला आदि फेरते हैं। तुम बच्चों को सवेरे उठ बाप को याद करना चाहिए। विकर्म विनाश के लिए योग-अग्नि चाहिए।

(ई) मीठे बच्चे, **रोज़ अमृतवेले ज्ञान-योग की वास धूप जगाओ, तो विकारों रूपी भूत भाग जायेंगे।** अमृतवेले बाबा की याद अच्छी रहती है। कहते हैं सिमर-सिमर सुख पाओ। भक्त लोग भी कहते राम सुमिर प्रभात मोरे मन...।

(उ) हे रूहानी योद्धे, तुम सदा श्रीमत पर चलते रहो। आत्म-अभिमानी बन बाप को याद करो। रोज़ सवेरे-सवेरे उठ याद में रहने का अभ्यास डालो, तो **माया पर विजय प्राप्त कर लेंगे।** याद की मीठी युक्ति मायाजीत बना देगी। पवित्र होने के लिए याद के सिवाय और कोई उपाय नहीं है।

(ऊ) मीठे बच्चे, अमृतवेले उठ बाप से मीठी-मीठी बातें करो, तो **शरीर का भान खत्म हो जायेगा, सिमरण करते-करते अन्त मति सो गति हो जायेगी।** ऐसी प्रैक्टिस करनी है जो अन्त में देह भी याद न पड़े।